जेनेटिक रूप से परिवर्तित मछली को मंज़ूरी

संयुक्त राज्य अमरीका के खाद्य व औषधि प्रशासन ने पहली बार किसी जेनेटिक रूप से परिवर्तित जंतु को खाद्य पदार्थ के रूप में मंज़ूरी दी है। यह जंतु है साल्मन नामक मछली जिसमें इस तरह के जेनेटिक परिवर्तन किए गए हैं कि वह ज़्यादा तेज़ी से बढ़ती है। साल्मन की इस किस्म का विकास दो दशक पहले किया गया था।

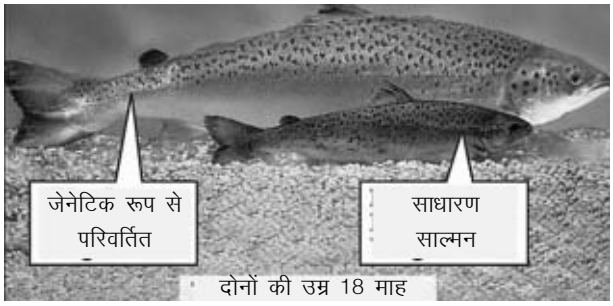

मंज़ूरी मिलने के साथ ही कई पर्यावरण संगठनों और खाद्य सुरक्षा से जुड़े संगठनों ने इस निर्णय का विरोध किया है। पर्यावरण समूहों का मत है कि यह जेनेटिक रूप से परिवर्तित साल्मन प्राकृतिक तंत्र में पहुंचकर पूरी इकोसिस्टम को विकृत कर सकती है। दूसरी ओर, खाद्य सुरक्षा समूहों का मत है कि कम से कम इस मछली पर यह लेबल लगाना तो अनिवार्य किया जाना चाहिए कि यह जेनेटिक रूप से परिवर्तित है।

इस मछली का विकास मैनार्ड की कंपनी एक्वाबाउंटी ने किया है और इसे नाम दिया है एक्यूएडवांटेज साल्मन। इसमें इस तरह के जेनेटिक परिवर्तन किए गए हैं कि इसमें वृद्धि से सम्बंधित हारमोन ज़्यादा बनते हैं। इस वजह से यह अपना पूर्ण विकास 3 वर्ष की बजाय 18 माह में ही पूरा कर लेती है। इस टेक्नॉलॉजी के समर्थकों का कहना है कि प्रति किलोग्राम उत्पाद के लिए यह मछली कम भोजन का उपभोग करती है। यानी यह जंगली साल्मन के शिकार को रोकने में मददगार होगी।

इस साल्मन को मंज़ूरी देने से पहले 2010 में खाद्य व औषधि प्रशासन ने इसकी खाद्य सुरक्षा की जांच की थी और फिर 2012 में पर्यावरणीय प्रभाव का आकलन किया था। उसके तीन साल बाद जाकर प्रशासन ने इसे खाद्य पदार्थ के रूप में अनुमति दी है। इस लम्बी अवधि का कारण कुछ लोग राजनैतिक हस्तक्षेप को मानते हैं मगर खुद प्रशासन का कहना है कि यह एक सर्वथा नई चीज़ थी और किसी भी नई चीज़ को पहली बार मंज़ूर करते हुए अतिरिक्त सावधानी रखी जानी चाहिए। इसीलिए सारे परीक्षण हो जाने के बाद भी मंज़ूरी देने में देरी हुई।

जेनेटिक टेक्नॉलॉजी के समर्थक मान रहे हैं कि इसके बाद जेनेटिक रूप से परिवर्तित खाद्य पदार्थों को अनुमति मिलने की रफ्तार बढ़ेगी और इस टेक्नॉलॉजी का समुचित उपयोग हो पाएगा। ***(स्रोत फीचर्स)***